



कुल पृष्ठ संख्या 24 (क्रवर पेज सहित)



4119357

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

53165

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

1 2 5 8 7 7 7

(In Words)

Twelve thousand Seven Hundred Seventy Seven

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में _____

नोट :- परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम — हिन्दी अंग्रेजी

विषय Samskrut

परीक्षा का दिन Saturday

दिनांक 8-4-23

नोट :- परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

- परीक्षक हेतु निर्देश :- (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।
 (2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।
 (3) कुल योग मिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी

(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की संख्या	क्रम प्राप्तांक	प्रश्नों की संख्या	क्रम प्राप्तांक
1	2	19	4
2	4	20	4
3	2	21	4
4	3 1/2	22	3 1/2
5	3	23	3
6	3 1/2	24	
7	3	25	
8	3	26	
9	3	27	
10	2	28	
11	6	29	
12	1	30	
13	1	31	
14	2	योग	69 1/2
15	1	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	2	अंकों में शब्दों में	
17	3	70	21 1/2
18	1		

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक 60404

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. इको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 175/2023

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न-पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न-पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटे।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
 - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
 - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर-पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ क्रम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
 - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, कैलक्यूलेटर, मोबाइल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
 - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस-पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
 - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक क्रम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटे।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न-पत्र हिन्दी-अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

परीक्षार्थी उत्तर

वट्ट - अ

→ ३८८ - १

(1+1)
= (2)

(ii)

(अ)

बहुदर्शी

(iii)

(स)

अक्षयम्

(1+1+1)

→

३८८ - २

= (4)

(i)

(स) घुमन् + मुच्यति (अनुश्वारः)

(ii)

(अ) अन्तः + नाति (स्वरम्)

(iii)

(व) सीच्यत (शुल्कम्)

(iv)

(स) धरेक्षणात् (स्वरम्)

(1+1)
= (2)

(i)

(ए) न + अव + सीधति

(ii)

(स) निर् + अर्थकम्



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक
प्रश्न

परीक्षार्थी उत्तर

~~3 + 2
85 →~~

3 ग्रन्ड - 4

(क)

~~1 + 1 + 1
3
35 →~~

(ब) वार्षिक्यां :

(अ) मार्गीया क्रमकृति :

(ब) व्यागस्य

(इ) सामाजिक

BSER-175/2023

→ (ख)

(i)

व्यागमापना

- 1 + 1

- 2

(ii)

कल्याण

→ (ग)

(i)

मार्गीयसम्बन्धित पुनः परेषाम् उपकाशय
निषिद्धवाचनि त्यक्तुः स्वयति ।

- 1
- 2

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी-उत्तर

(ii) भारतीय संस्कृतिः सर्वथा आध्यात्मिकी, भोग
रूचाने योगमेव शिक्षयति ।

→ (प)

⇒ 1 शीर्षकः → भारतीय संस्कृतिः ,

→ (S.) → संक्षिप्तीकरणः

⇒ 2 मानव जीवनस्य साक्षलयं त्यागीनेव भवितुमर्हति,
न तु भोगेन । भारतीया संस्कृतिस्तु सर्वथा
आध्यात्मिकी, भोग रूचाने योगमेव शिक्षयति ।
भारतीयसम्बन्धतः पुनः पैषाचाम उपकाशय विज्ञवाणी
त्यक्तुं पैरयति । त्यागो हि अस्याः एकी
मठामन्त्राः येन पित्रकलयां भौमि भवितुमर्हति ।
वैदिक मठाभिभूतु बहुकालं पूर्वगीवत्यागस्य मात्रिमा
उद्घोषितः ॥ तेन त्यक्तेन भुज्जीया ना गृष्णः
कवचास्विद्यनन् ॥ ।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

2905.- ब

प्र० 1



3rd - 5

प्र० 3

(i)

मठानः इव वृक्षः (कर्मधारयं समाप्तं)

(ii)

पिककारोः (घुवन्दं समाप्तं)

(iii)

विमुहः धीः यज्ञः क्षः (वहुब्रीही समाप्तं)

प्र० 1



3rd - 6

प्र० 3

(i)

त्रितीया विभावित (विना योगीः)

(ii)

तृतीया विभावित (कांगम योगीः)

(iii)

षष्ठी विभावित (कमीपे योगीः)

(iv)

षष्ठी विभावित (गम विशेषताः योगीः)

→

3rd - 7

प्र० 1

प्र० 3

(i)

वाक्नीयः

(ii)

मठा + कर्म + लक्ष्मी

(iii)

काम + लक्ष्मी

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

111 →

उत्तर - 8(i) भवित्व(ii) अपि(iii) न क

251 →

उत्तर - 9 (क)(i) आवाम्(ii) मुख्ये

०५ →

(क)

(i) करय(ii) लभन्ते



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

(i) →

3502 - 10

(ii)

त्रिंशतिष्ठकव्याप्तम्

(iii)

पञ्चचत्वारिष्ठक X

(iv)

पञ्चचत्वारिष्ठातिष्ठक पृष्ठातम्

BSER-175/023

254-6

[2505 - 25]

→

3502-11 (अ)

(i)

-पातकः

(ii)

-पन्द्रयासः

(iv)

पूर्ण अष्टितम्

(vi)

बांकिम-चन्द्रः-पठभीः

परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंकप्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

→ 3Gd2 - 11 (अ)

(अ) (i)

उत्तरांकणः लिखित लंगांमा माला समाचार।

(ii)

बुद्धिमती ग्राहन कानने व्याघ्र वद्वर्ष।

(iv)

उपनयोनपदेशीन भस्त्रवद्येन वाल्मीकिः लवकुलयोः।

(v)

वस्त्रवद्य ग्रुण यिकुं वैति।

→

3Gd2 - 12

BPR-175/2023

(i)

केषाम् ऋक्षुपाणं चीयते?

(ii)

क्षयां छ नामनी?

(iii)

कः लभ अपुच्छत?

→

3Gd2 - 13

(i)

अन्वयः → मूला कुण्डे राकः कुण्ड, धना

हितम् ही च हितम्।

आत्मपूर्णं न हितं राकः पूर्णा पूर्णं ह

हितम्॥



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

१८)

→

3rd E - 14

(2) (ii)

शरीरायां भजनं कर्म व्यायाम एवं किटम् ।
ततः कृत्वा तु सुखं देहं प्रिमुद्दलीयात् समन्तः॥

(iii)

न चेन् भद्राप्रद्य जरा समीघरीही ।
स्थिरीभवति मांस च व्यायाम भिरतस्य च ॥

(1)

→

3rd E - 15

आवादः →

व्यायामं शारीरः उपचः कोनिंतगतिरिक्ताणां
सुविशेषता, दीप्ताग्रिनत्वमनालस्य लाघवं स्थिरत्वं
क्षियत्वा ॥

अर्थात् → शारीरः सर्वदा रथेन बहुलाभम्
भवति । शारीरिक भौन्यर्थ शारीरिक
अंरो सुगठन, कृपात् च आदि लाभम्
सन्ति ।

(2)

→

3rd E - 16

∴ बुद्धिवलवती सदा पाठः हृतन्य शुक्सदती
अस्ति । इस पाठ में एक मीडिला
की चक्ररथी की धर्माया है । वह मीडिला



मेरी पुस्तिका का सहायता लेके बाय के कुछ हो
नाती है।

साएः>

दृढ़ नामक व्यक्ति गाँव था। वहाँ एक शाखापुत्र
रहता था। उस दिन उसकी पांडी
बुद्धिमती अपने बौतों पुत्रों के बाय पिता के
घर की ओर जा रही थी। उसने बस्ते में
जने घंगल में व्यक्ति बाय को देखा। उस
बाय की मापने पास आता हुआ देखकर वह
धृष्टि से थोनो पुत्रों की हताए करती हुस्त
बोली। 'वयों व्यक्ति-स्फुर इसे खाने के लिए इण्ड^इ
रहे हो। यह व्यक्ति है क्यों बोर्त कर खाली,
बाय में 'कोई अन्य देख लेना। क्योंकि सुनकर
वह बाय डर गया कि यह कोई व्याप्ति की मारने
वाली क्लींकी वसलिए वह बाय वहाँ से भाग
गया। बाय को धराया हुआ देखकर कोई
धृति सियार बोला।' 'उन्हे भवान आप
वहाँ से भाग करं आ रहे हो॥' सियार
के लेसा पुँछने पर बाय ने बताया कि वहाँ
कोई व्याप्ति मारी नहीं वसलिए तुम भी भाग नाजो।
सियार यह सुनकर हँसने लगा और बाय का
वहाँ मध्याक उड़ाया।

फिर सियार ने कहा कि चलो तुम अब ऐसे
भाय युवाश वहाँ चलो। वह बाय सियार की
गले में बौद्ध कर फिर वहाँ चल दिया।



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
672		गाले में बैही हुए सियार के साथ जाप को फिर से आगे देख बुधिमती डूर भाँज गई। परन्तु उपनी बुधिद से बह फिर से बाघ के सब की मुक्त हो गई। इसलिए कहा जाता है → “बुधिदबलविती सर्व कार्येषु श्रद्धा।”
		[२७०५ - ८]
672	→ 3rd Ques - 17	
(i)		एक बुझुदितः वृगालः भीजनार्थ वने इतकततः भ्रमतिक्ष्म ।
(ii)		एकस्मिन् स्थाने सः द्राक्षालताम् अपश्यत्।
(iii)		लतायां बहुनि पक्वानि द्राक्षाफलानि आसन्।
(iv)		तानि च्यादितुः सः नेकवारः स्याभ्यु अकरोत्।
(v)		परं तथायि द्राक्षाफलानि न माञ्जीत्।
(vi)		“ एतानि द्राक्षाफलानि अम्लानि ” बति कथयित्वा कृषितः वृगालः तदः पलायितः ।



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

100->
(i)

उत्तर - 18

आवाम् पाठ्यालां राच्यापः ।

(ii) नृपायः स्त्रयः तथति ।

(iii) केशवः श्रीनिः लिखति ।

(iv) पुर्यम् मंस्कृतम् प्रयत् ।

→ उत्तर - 19

87/2
Date - 17/2/2021

प्रथा संखि शीते ।

सांदर्भं नमस्ते ।

अत्र कुशलम् तत्रास्तु । समवैष्टी
रक्षाबन्धन दिवसे मंस्कृत दिवसः
परिपल्यते । वयमपि तयो विद्यालये संकृत दिवसम्
पालयामः । मध्यमि संकृत दिवसे संकृतं हीतम्
गायामि । मम भक्ति संकृते भोषणम्
दयति । एषा संस्कृत भाषा विविधाभाजननी
अस्ति । अतः महायज्ञं संकृतं
शेचते ।

अस्तु नमोनमः ।

भवथीया भक्ति
लक्ष्मीः



→

3rd - 20

(iv)

वृत्तिं → प्रस्तुत गायों द्वारा संकृत की पाठ्यपुस्तक, श्रीमृषीः आग-२, के खननी कल्पतस्त्र, नामक पाठ से लिया गया है।

यह पाठ मदाभारत के वनपर्व से लिया हया है। इस पाठ में श्रीमी गायों की माता 'सुरभि' और येवी के बाजा 'इन्द्र', के मध्य हुए संवाद की बताया है। इस पाठ में माता को समान त्रैमै वाली बताया है,

अनुवाद: → श्रीमि पर गिरे हुए उपने उत्र की देखकर सभी गायों की माता सुरभि की ओंको में ओंसु आ गए। सुरभि की वैसी अवस्था देखकर देकाजा के बाजा इन्द्र ने उससे पूछा → "अरे शुभ्रो! क्यों हो रही हूँ?"

"हे इन्द्र! उत्र की थीन (ध्यानीय) रिचति देखकर मैं ही रही हूँ।"



(Q)

उत्तर - १

प्रश्नग्रं : मरुतुत पद्मांशु उमाशि कांक्षित की पाठ्यपुस्तक । शोभुषी : भाग - २ के सुधासितानी, घाठ से लिया गया है। इस पद्मांशु में महान व्यक्तियों की विवेचना जाती है इन्हीं की वे छापरिक्षिति में अमात् रवभाष वाले दृष्टे हैं। अर्थात् न सुख में उत्थापन मृसने होते, न दुःख में उथापन होते।

उत्तराद् : महान लोग शंपति अथवा विपति अर्थात् (सुख और दुःख) में एक कप के दृष्टे हैं, अर्थात् कप ही रवभाष वाले दृष्टे हैं।

प्र॒श्नी : सूर्य उगते समय भी लाल वर्ण अथवा मस्त होते समय भी लाल वर्ण का होता है। ∵ सूर्य की ज्युरी की झाँटि एक ही स्कार का रहना चाहिए। बार-बार उपना व्यपार नहीं बदलना चाहिए।



(35) →

उत्तर - ५२

* प्रश्नां → प्रश्नात् नाट्यांश्च हमारी संस्कृत की परम्परापुस्तक ६ शोभूषि० भाग - २, के विशुलालक्ष्म पाठ से लिया गया है।

वस्त नाटक का मूल ग्रन्थ ६ कुन्दमाला है। इसके रचयिता विज्ञनार्थ है। वस्त पाठमीशाम और लव-कुश के मध्य हुए संवाद को लिया है। वस्त पाठ में जप्ते को धोति उस्त के काण लोलनीय अचान्त रूप फरने वाल्य लिया है।

★ अनुवाद →

विद्वाः → मैं किर पूष्ट हूँ। क्या नाम है
मुस्तारी माता का।

लवः → उनके दी नाम है।

विद्वाः → कौसे।

लवः → तपीवन गासी देवीति नाम से
उकारते हैं। मगवान वालसीकि पृथुरिति
नाम से।



रामः । मार्गे भी मदान ~~सिंह~~ । मृष्णरत का
अमय दी गाया ।

→

उत्तर - 23

692

गोविन्दः → ओ मित्र गोपाल ! सुखमात्रम्

3

गोपालः → ii) नमोनमः

गोविन्दः → अवान् iii) कथम् — जीति ।

गोपालः → अदं अवतः ॥ अस्मि ।

गोविन्दः → शः मम खन्मदिनम् — भविष्यति ।
कृपया आगच्छतु ।

आरामित्याग्नि

गोपालः → अस्तु अदं शः — निरापदः ।

गोविन्दः → कुशली अग्नीम् अपि आनयतु ।

गोपालः → तस्याः कृपाक्षयम् सम्यक् नास्ति ।

गोविन्दः → मृष्णन आगच्छतु ।

गोपालः → अस्तु, जाप । फुनः विलापः ॥

692 28



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

6 समाप्ति

BSER-175/2023



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSE-RJ/5/2023



परीक्षार्थी उत्तर

परीक्षक द्वारा प्रश्न
प्रदत्त अंक संख्या





परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर



परीक्षक द्वारा
प्रदत्त अंक

प्रश्न
संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

BSEB 175/2013

